

## अस्पताल में भरती होने के बाद कोवडि-19 रोगियों की मृत्यु दर

### प्रलिस के लयि:

भारतीय चकितिसा अनुसंधान परषिद, [कोवडि-19](#)

### मेन्स के लयि:

स्वास्थ्य सेवा प्रणालयों का कोवडि-19 के बाद की मृत्यु दर को कम करने में योगदान

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में [भारतीय चकितिसा अनुसंधान परषिद](#) (Indian Council of Medical Research- ICMR) द्वारा कयि गए एक नए अध्ययन में पूर्वकोवडि-19 से संक्रमित रोगियों की अस्पताल में भरती होने के बाद की मृत्यु दर पर प्रकाश डाला गया है।

- यह अध्ययन रोगियों की संवेदनशीलता पर प्रकाश डालता है तथा सहरुगणता (एक ही समय में एक से अधिक बीमारियों), उम्र और टीकाकरण जैसे अन्य कारकों के गहन मूल्यांकन के माध्यम से मृत्यु दर के जोखिम को कम करने के लयि स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को हल करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

### अध्ययन के प्रमुख बडि:

- मृत्यु दर और प्रतभागी जनसांख्यिकी:
  - इस अध्ययन में 31 भारतीय चकितिसा केंद्रों में 14,419 पूर्व कोवडि-19 रोगियों की जाँच की गई।
  - अस्पताल से वापस आने के एक वर्ष बाद इन रोगियों की मृत्यु दर 6.5% पाई गई है।
  - इनमें से लगभग 50% मरीजों की अस्पताल से छुट्टी मलने के 28 दिनों के भीतर मृत्यु हो गई।
  - अस्पताल से छुट्टी मलने के बाद समय बीतने के साथ-साथ मृत्यु का जोखिम भी कम होना पाया गया।
  - 60 से अधिक आयु वर्ग के व्यक्तियों (वशिष रूप से कई बीमारियों के कारण) में मृत्यु दर का खतरा अधिक पाया गया।
- कोवडि-19 के बाद की स्वास्थ्य स्थितियों की व्यापकता:
  - 17.1% व्यक्तियों ने कोवडि-19 के बाद थकान, साँस लेने में तकलीफ, अनुभूति में बदलाव और ध्यान केंद्रति करने में कठिनाई जैसे लक्षणों की जानकारी दी।
- मृत्यु दर के वभिन्न कारकों का अध्ययन:
  - इस अध्ययन में केवल कोवडि-19 से होने वाली मौतों पर ध्यान केंद्रति करने के बजाय मृत्यु दर में बड़े पैमाने पर योगदान देने वाले सभी कारणों की जाँच की गई।
  - मृत्यु दर के वभिन्न कारकों में सहरुगणता जैसे अन्य कारक शामिल हैं।
- टीकाकरण और रोग की गंभीरता:
  - टीकाकरण से कोवडि-19 संक्रमण से पहले लगभग 60% सुरक्षा मलित है।
  - टीका अस्पताल में भरती होने के दौरान रोग की गंभीरता को कम करने में योगदान करता है।
- उच्च मृत्यु दर जोखिम भेदयता:
  - मृत्यु दर जोखिम को प्रभावति करने वाले कारकों में सहरुगणता, आयु और लयि जैसे कारक शामिल हैं।
  - एक सहरुगण स्थति वाले मरीज की मृत्यु की संभावना 9 गुना अधिक होती है।
  - पुरुषों ने 1.3 गुना अधिक जोखिम का सामना कयि तथा 60 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के लोगों को 2.6 गुना अधिक जोखिम का सामना करना पड़ा।
  - यह अध्ययन मृत्यु दर जोखिम को कम करने के लयि सहरुगणता के प्रबंधन के महत्त्व को रेखांकति करता है।
- बच्चों की संवेदनशीलता:

- 0 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों को चार सप्ताह और एक वर्ष के फॉलो-अप के मध्य 5.6 गुना अधिक मृत्यु के जोखिम का सामना करना पड़ा।
  - अस्पताल में भरती होने के बाद पहले चार सप्ताह के दौरान यह जोखिम 1.7 गुना अधिक होता है।
- कैंसर और कडिनी विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं वाले बच्चों की मृत्यु की संभावना अधिक होती है।
- अध्ययन की सीमाएँ:
  - इस अध्ययन में दीर्घ अवधितक रहने वाले कोवडि लक्षणों की जाँच शामिल नहीं थी।
  - इस अध्ययन में पोस्ट कोवडि स्थिति (PCC) में उपयोग की गई परिचालन परिभाषा न तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization- WHO) और न ही संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसी, जसिसेंटर्स फॉर डिसीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन कहा जाता है द्वारा प्रदान की गई परिभाषाओं से सटीक मेल खाती है।
    - पोस्ट कोवडि स्थिति (PCC) के लिये WHO की परिभाषा के अनुसार, हमें तीन महीने तक इंतज़ार करना होगा और फिर जाँच करनी होगी कि क्या लक्षण दो महीने तक बने रहते हैं, यह कहती है कि लंबे समय तक कोवडि के लक्षणप्रारंभिक संक्रमण के बाद तीन महीने तक बने रहते हैं।
    - लॉन्ग कोवडि-19, जैसा कि रोग नियंत्रण केंद्र (CDC) द्वारा परिभाषित किया गया है, में कोवडि-19 संक्रमण के बाद की विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ शामिल हैं, जो संक्रमण के कम-से-कम चार सप्ताह बाद शुरू होती हैं। हालाँकि भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) ने अध्ययन में केवल चार सप्ताह (उसके बाद नहीं) की अवधि में लक्षणात्मक मूल्यांकन किया।

## भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR):

- ICMR जैव चिकित्सा अनुसंधान के संचालन, समन्वय और प्रचार के लिये भारत में शीर्ष निकाय है।
- ICMR की स्थापना वर्ष 1911 में इंडियन रिसर्च फंड एसोसिएशन (IRFA) के रूप में की गई थी और वर्ष 1949 में इसका नाम बदलकर ICMR कर दिया गया।
- ICMR को भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के माध्यम से वित्तपोषित किया जाता है।
- इसका अधिदेश समाज के लाभ के लिये चिकित्सा अनुसंधान का संचालन, समन्वय और कार्यान्वयन करना है; चिकित्सा नवाचारों को उत्पादों/प्रक्रियाओं में बदलना तथा उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में पेश करना है।
- ICMR विभिन्न स्वास्थ्य अनुसंधान परियोजनाओं और कार्यक्रमों पर WHO, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF) आदि जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ भी सहयोग करता है।
- ICMR ने विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से जैव चिकित्सा अनुसंधान में मानव संसाधन विकास एवं क्षमता निर्माण का भी समर्थन किया है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**[?/?/?/?/?]:**

**प्रश्न.** कोवडि-19 महामारी ने भारत में वर्ग असमानताओं एवं गरीबी को गतादि दी है। टपिपणी कीजयि। (2020)